लगि

28 अप्रैल 2018

अदरक की संरचना के समान। मट्टिी के नीचे स्वयं ही बढ़ता हुआ। प्रत्येक जड़-खंड एक साथ केंद्र-जड़ भी बनता है और स्वयं भी बढ़ाता है। कोई खंड टूट भी जाए तो भी अपनी लय में चलता रहता है। डेल्यूज़ और गुआतारी से आता यह रूपक — प्रकंद — के कार्य-प्रतिमान का आधार है और लगि-सभा की भूमिभी बनाता है।

हम ज्ञान की अखंडता में विश्वास करते हैं। 1980 के दशक के बाद प्रत्येक ज्ञान को अपनी विधा में दबा देना ग़लत है। कला, अर्थशास्त्र, पारिस्थितिकी, समाजशास्त्र, दर्शन — इन्हें संधि-बिंदुओं पर बोला जाना चाहिए।

- ,, ,, —- , , -- — 1980 —,,,, -

- , - , -,,-,,, —- ,

1968 ,12 2.5 , —

मैंने स्त्रीवादी सिद्धांत की खोज की। जब मैंने उसकी खोज की, मुझे चैन मिला। यानी मेरे सिर में हर वस्तु अपने स्थान पर बैठ गई। समझ आया कि यह सब क्यों हो रहा था।

12 12 «» , — ,—: - ,- — , — - « » -

— , ,« »

मैं स्थिति को न समझ पाने से ही जुड़ी हूँ इसलिए कहती हूँ। तुर्की में बिल्कुल नई स्थिति है और हमारे मस्तिष्क इस नई स्थिति के अनुरूप उत्तर नहीं रच पाते।

- 1983 - - — , - : — , : , - - — «-» , ,

?

? , — ?

हमें सड़क से खदेड़ा गया, किंतु सड़कें महत्वपूर्ण हैं। गेज़ी में मरे बच्चे, आघात... गेज़ी के बाद गतिशीलताएँ बदल गईं।

— 8 40 ; - —, -,- — - — ,

- :-,,,, ,- , - — : , ,, —- - -

: «» , - ,-,- — , - , , - — - -,- — ,

1982 , 12 , -, — - - , , - , 11 - , , , -, — - : , , , , - — ,

मैं बहुत प्रतीक प्रयोग करने वाली व्यक्ति हूँ। ऐसे मैं अपने काम कोड करती हूँ। प्रतीकों, संख्याओं से काम करती हूँ। जीवन के सबसे सरल प्रतीक।

-,- , - — 29 , - 3 - — - « » , «» — 36 -,- -

, , — ,- ,- — ,

की संकल्पना पर चर्चा होती है: कला का अदालत में साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किए जा सकने का सामर्थ्य।
स्टैंडिंग रॉक में स्वदेशियों के हस्तशिल्प, फ़ोरेंसिक वास्तुकला — कलात्मक डेटा विधिक डेटा में बदलते हैं। काराडुल/नाइट ब्लूमर्स शृंखला यौनकर्मियों के अदृश्य बनाए गए जीवन को दृश्य बनाती है। वंदना शिवा के बीज-बैंक, जैव-विविधता — स्थानीय बीजों और बीज-पेटेंटों के बीच का युद्ध लिंग-प्रश्न से बुना हुआ है। बीज के पेटेंट और स्त्री-शरीर के नियंत्रण के बीच की संरचनात्मक समानता आकस्मिक नहीं।

1969 , , - — - , , - — - «», ÖSS , - « » — , , LGBTI+ - , - LGBT , «» - :

अभी उत्पादन नहीं करेंगे तो कब करेंगे?

– ,- — - : , – : ,

मैं उदाहरण के लिए अपने बीसवें वर्ष की शुरुआत में पुलिस से टकराने वाला व्यक्ति था। किंतु आज पीछे देखने पर भी मुझ में ही एक प्रश्न-चिह्न, एक भय है।

, 2007 — – – ; , —

+ सक्रियता ने भी ऐसी ही यात्रा की है। 2001 में इस्तांबुल विश्वविद्यालय समाजशास्त्र से आरंभ हुआ मार्ग — अनार्किस्ट आंदोलन, स्त्रीवादी आंदोलन, इराक़-युद्ध-विरोधी मंच, । 2005 में इस्तांबुल प्राइड में 300-400 लोग चले, बाद के वर्षों में दस-दस हज़ार तक पहुँचे — और फिर प्रतिबंध। परामर्श-रेखा स्थापित हुई, 10 पुस्तकें अनूदित हुईं, विषमलिंगिवाद की संकल्पना पर काम हुआ। मानव-संसाधन विकास फ़ाउंडेशन में आठ वर्ष सामाजिक-कार्य — क्षेत्र में सीखा जो होता है वह पुस्तकों से सीखे से भिन्न होता है। सड़क-कार्रवाई से सैद्धांतिक कार्य तक संक्रमण हानि नहीं, गहराई है। स्वतंत्र शोधकर्ता बनना, संघवाद, अनुवाद — हर एक स्वयं में संघर्ष का रूप। अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है ताकि हम संघर्ष कर सकें — आत्म-रक्षा प्रतिरोध से कम महत्वपूर्ण नहीं।

हर पैनल में जाती थी, नोट्स बनाती थी। उन्हें लेखों में बदलने का अवसर मिला।

- « » — – : — — «» « » — , — , ,– — :

, , : — , ?

मैंने अपने बच्चे को सदा कोड न करने का प्रयास किया। मुझे सदा विश्वास रहा कि वह वस्तुतः जन्म से ही... कि हमारी प्रकृति वस्तुतः जानती है कि हम क्या चाहते हैं और किस वस्तु में हम शांत और प्रसन्न हैं।

, ,- — , ,-, — 40 , — , , — ,

- ? - , - — ,

हम कसि बारे में बात कर रहे हैं? पृथ्वी के लए अत-आवश्यक वस्तुएँ हैं कति ये सब पहचानें, लगि, सीमाएँ, देश, राजनीतज्ञि सब उड़ जाते हैं।

: — , , — , ,-,- — , , « » — ,

-, , - – - - ,- — – — ,-

तर्लाबाशी में कार्यशाला, ज़ाहा हदीद की कारतल-परयिोजना के वरिुद्ध आलोचनात्मक चति्र, आग जहाँ गरिी प्रदर्शनी — 131 कलाकार, मानव-अधकिार फ़ाउंडेशन की 20वीं वर्षगाँठ। नगर, शरीर और लगि अवच्छिन्नि हैं।

1984 ,- - —-,-,- , , - 2015 -, —

, , — « » — 131 ,- 20 — : , ? — ,

- — —- -, – -,- - —

मैंने अकादमकि छोड़ा। उत्पादन पहले ही बहुत कम होने लगा था। सीखने की प्रवृत्तभिी कम होती जा रही थी।

— - - — , — -, « » , , -, , - — , - , —

- , ,- - — « »

शहवेती बोस्तान परयिोजना — , नहीं अर्थात इच्छा — हसिा भोग चुकीं स्त्रियों के लए सुरक्षति, आत्म-नरि्भर जीवन-क्षेत्र, स्मृतवििन, मारी गई सहेलयिों के लए पौधा रोपने का अभ्यास है। हांडे कादेर जैसी ट्रांस स्त्रियों की हत्याएँ इस परयिोजना को अत-आवश्यक बनाती हैं। इच्छा-राजनीतका मूर्त रूप: हसिा के सामने देखभाल और स्मृतरिखना, वनिाश के सामने पोषण।

- – — - , , — , - — ,

—

हम वास्तव में बहु-बहु आयामी स्थान में हैं। और प्रत्येक आयाम के प्रतसिचेत होने का प्रयास करना चाहए, मेरे वचिार से। यदहिर कोई कसिी एक वस्तु से अच्छी तरह जुड़े, कई समाधान नकिलेंगे।

: , , , 12 , 12 , — , — - «-» , — ,

यह अवश्य होगा। अपने समय में जन्हिोंने पृथ्वी को गोल कहा, उन्हें भी पागल कहा था। यह अवश्य होगा — मैं आशा रखना चाहती हूँ।

इस सभा में एकत्र हुए स्वर — राजनीत-िशास्त्री, + कार्यकर्ता, पारस्थितिकिीय-जीवन-अभ्यासी, स्त्रीवादी कलाकार, वृत्तचति्र-नरि्माता, संघवादी — तुर्की के राजनीतकि क्षणों से गुज़रे हुए, 12 मार्च से गेज़ी तक, से अलाकीर घाटी तक के मार्ग चले हुए, सर्वसत्तावाद से सामना कएि हुए, कति आत्म-समर्पण न करने वाले लोग हैं। प्रश्न — कला या सड़क, अकादमकि या सामूहकि? — ग़लत प्रश्न है। प्रकंद के समान, मट्टिी के नीचे स्वयं ही बढ़ता हुआ, हर एक केंद्र-जड़ बन सकने वाला, टूटने पर भी चलने वाला जाल। वधिा-रहतिता कमी नहीं, होने का रूप है। पारस्थितिकिी, लगि, कला, संगठन — ये अलग संघर्ष नहीं, एक ही संघर्ष के वभिन्नि

- - , — -